आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2014-2016

मासिक पत्रिका

अजायब ✵ बानी

वर्ष : चौदहवां | अंक : दूसरा | जून-2016

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

5 **अमृतवेला**

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

9 **सत संगत जग सार साधो**

(कबीर साहब की बानी)

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

21 **अपने आपको गुरु पर समर्पित करें**

(16 पी.एस.आश्रम, राजस्थान)

संपादक-प्रेम प्रकाश छाबड़ा
99 50 55 66 71
उप संपादक-नन्दनी

विशेष सलाहकार-गुरमेल सिंह नौरिया
99 28 92 53 04, 96 67 23 33 04
सहयोग-परमजीत सिंह, सुमन आनन्द व ज्योति सरदाना

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर – 335 039 जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com | Website :www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 जून 2016 -171- मूल्य – पाँच रुपये

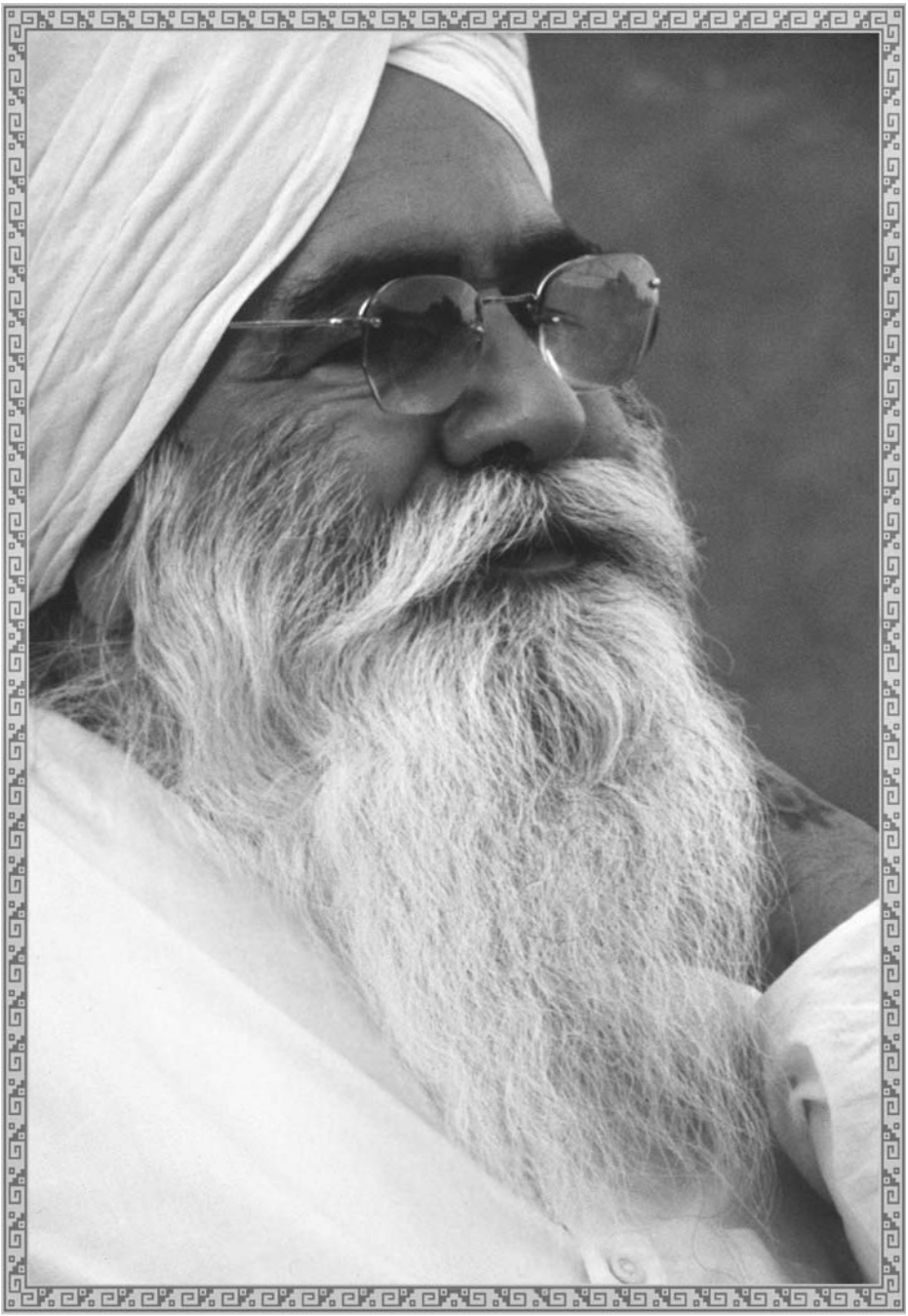

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

अमृतवेला

परमात्मा ने हमें इंसानी जामा दिया है। इंसानी जामें के यह फायदे हैं कि हम जो काम पशु-पक्षी के जामें में नहीं कर सकते वह काम इंसानी जामें में कर सकते हैं; वह काम परमात्मा की भक्ति और परमात्मा का प्यार है।

हमारी आत्मा अपने राजघराने को भूल गई है। यह आत्मा सतवंश में परमात्मा की पुत्री थी, परमात्मा को भूलकर मन के साथ दोस्ती करके पापों के भार के नीचे दब चुकी है। हमारी आत्मा जैसे-जैसे परमात्मा से दूर होती गई इसके ऊपर स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीन पर्दे चढ़ गए। अब इसे यह नहीं पता कि मेरा घर कौन सा है? परमात्मा ने जब इस आत्मा को पापों के नीचे दबा हुआ देखा तो परमात्मा सन्त रूप धारण करके इस संसार में आया और उसने अपना भेद बताया। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

सन्तरूप होए जग में आया, अपना भेद आप उस गाया।

सन्त-सतगुरु का प्यार दुनिया का प्यार छोड़ने में हमारी मदद करता है। जैसे हम गर्मी से बचने के लिए पहाड़ के नज़दीक जाते हैं तो गर्मी दूर हो जाती है। जिसने भी फायदा उठाया सन्तों के साथ प्यार करके ही उठाया। सन्त हमारे प्यार के भूखे नहीं होते वे तो खुद अपने गुरु के प्यार में लगे होते हैं। गुरु के साथ प्यार करके ही हम दुनिया का प्यार छोड़ सकते हैं।

मुझे खुशी है कि आप कुछ दिनों के लिए अपने घरो के बंधन और जिम्मेवारियां छोड़कर परमात्मा की याद में इकट्ठे हुए हैं। मैं आशा करता हूँ कि आप जिस मकसद के लिए यहाँ इकट्ठे हुए हैं

उसके मुत्तलिक ही सोचें। सन्त हमें जो सिमरन देते हैं उस सिमरन में उनका तप-त्याग और चार्जिंग काम करती है। वे हमें सुना सुनाया या किताबों में से पढ़कर सिमरन नहीं देते। उन्होंने जो खुद प्रेक्टिकल किया होता है वे हमें वही बताते हैं।

जब हम लगातार सिमरन करते हैं, फैले हुए ख्याल को आँखों के पीछे ले आते हैं, तीसरे तिल पर पहुँचकर लगातार सन्तों का ध्यान करते हैं तब आत्मा ठहरनी शुरू हो जाती है। जब सेवक अपने जिस्म को भूल जाता है तब गुरु और सेवक एक बन जाते हैं, हम सिमरन के जरिए ही गुरु स्वरूप तक पहुँच सकते हैं।

जब अभ्यासी अपने आपको भूलकर लगातार सिमरन करता है तब उसे गुरु ही याद होता है फिर हम सूरज, चन्द्रमा, सितारे पार कर जाते हैं; आगे गुरु स्वरूप प्रकट हो जाता है। वहाँ जाकर ही सच्चा शिष्य बनता है फिर सेवक की ड्यूटी खत्म हो जाती है। गुरु शब्द के जरिए एक मंडल से दूसरा मंडल पार करवाता है।

गुरु यहाँ पहुँचे हुए शिष्य से कहता है, ''तू शब्द की डोर को पकड़।'' आत्मा ने ये मंडल शब्द पर सवार होकर ही पार करने हैं। यहाँ पहुँचकर शिष्य के अंदर सच्चा प्यार जाग जाता है, गुरु के लिए सच्ची मोहब्बत जाग पड़ती है क्योंकि वह अपनी आँखों से देख लेता है कि गुरु उसके लिए अंदर क्या कर रहा है।

गुरु अपनी दया से एक मंडल से दूसरा मंडल पार करवा रहा है। यहाँ पहुँची हुई आत्मा यहाँ की खुशी बयान नहीं कर सकती अगर बयान करती है तो तरक्की रुक जाती है। जब आत्मा यहाँ तक पहुँच जाती है तो उसे रूहानियत को इस तरह छिपा लेना चाहिए जिस तरह औरत अपने बदन को छिपाती है।

राजस्थान में सितम्बर ग्रुप में दस दिन का प्रोग्राम रखा गया था। इस प्रोग्राम में एक आत्मा ने अभ्यास में बहुत तरक्की की। जब उसने अंदर गुरु स्वरूप के दर्शन किए तो वह बहुत खुश हुआ। उसने यह सब अपने ग्रुप लीडर को बताया। सतगुरु ग्रुप लीडर उसे बनाते हैं जिसे कुछ देना होता है। कई ग्रुप लीडर सुस्त हो जाते हैं मान-बड़ाई में फँस जाते हैं अभ्यास नहीं करते। उस ग्रुप लीडर के दिल में जलन हुई कि मैंने तो इससे कई साल पहले नाम लिया था यह बाद में नाम लेकर इतनी तरक्की कर रहा है। उस बेचारे की तरक्की रूक गई, उसने मेरे पास आकर बहुत पछतावा किया।

महाराज सावन सिंह जी की एक नामलेवा ने बहुत तरक्की की उसने इसी तरह अंदर का भेद किसी को बता दिया तो उसका सब कुछ गायब हो गया। वह महाराज सावन सिंह जी के सामने खड़ी होकर रोने लगी कि मैंने जो कुछ प्राप्त किया था वह सब गायब हो गया है। महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''अगर हम हब्शी को शीशा दिखाएं तो वह शीशे को तोड़ देगा। अब तुझे मेहनत करनी होगी आगे किसी को मत बताना।'' हमें इस तरक्की को अपने अंदर जज्ब कर लेना चाहिए। जब हम तीसरे तिल पर एकाग्र हो जाते हैं हमें जिस चीज की खोज है, हम जिस चीज के लिए बैठते हैं वह चीज हमें अंदर से ही मिल जाती है।

मन को शान्त करें। हमारे अंदर दुनिया के जो संकल्प-विकल्प उठ रहे हैं उन्हें भुलाकर शान्त मन से अभ्यास में बैठें, शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है। अभ्यास को बोझ न समझें, प्रेम-प्यार से करें। बाहर की आवाज की तरफ ध्यान न दें क्योंकि हर व्यक्ति अपने काम में मशगूल है। मन को बाहर न भटकने दें, तीसरे तिल पर एकाग्र करें। हाँ भई! बैठें अभ्यास करें।

***

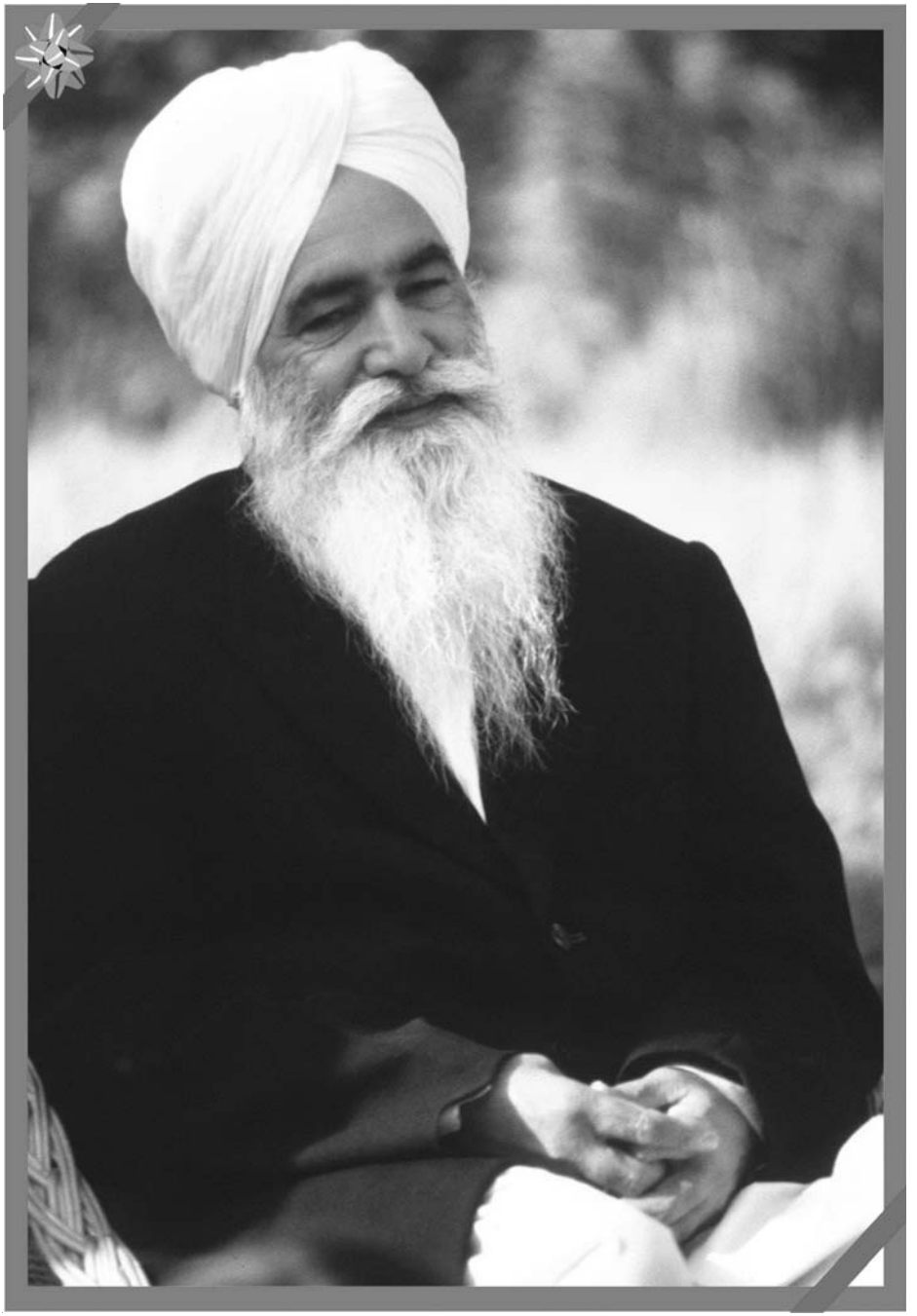

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सत संगत जग सार साधो

कबीर साहब की बानी | DVD - 576 | कोलंबिया

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमें अपना यश करने का और अपनी याद में बैठने का मौका दिया है। कल गुरु नानकदेव जी की बानी पर सतसंग हुआ था, जिसमें गुरु नानकदेव जी ने हमें अच्छी तरह समझाया था कि परमात्मा हमारे शरीर के अंदर है। सच्चखंड से 'शब्द' उठकर हमारे माथे के पीछे धुनकारे दे रहा है। वही पूरा सन्त है वही गुरु है जो हमें परमात्मा के घर पहुँचने का रास्ता बताए।

सन्त-महात्माओं की बानी के अंदर सतसंग की, नाम की और गुरु की महिमा होती है। नाम के बिना मुक्ति नहीं होती और सतसंग के बिना हमें समझ नहीं आती। मन के ऊपर संगत का बहुत जबरदस्त असर होता है। आज आपके आगे कबीर साहब के दो छोटे-छोटे शब्द रखे जा रहे हैं।

सन्त- महात्मा जो भी विषय लेते हैं उसके बारे में कोई कसर नहीं छोड़ते आदि से लेकर अन्त तक समझाते हैं। कबीर साहब पहले शब्द में सतसंग की महिमा के बारे में बता रहे हैं और दूसरे शब्द में उन लोगों के बारे में बता रहे हैं जो नाम लेकर भूल जाते हैं उस रास्ते पर नहीं चलते वे कितनी बड़ी गलती कर रहे हैं।

सत संगत जग सार साधो, सत संगत जग सार रे, (2)

1 काशी नहाऐ, मथुरा नहाऐ, नहाऐ हरिद्वार रे, (2)
चार धाम तीर्थ फिर आऐ, मन का नहीं सुधार रे,
सत संगत जग .....

2 वन में जाऐ कियो तप भारी, काया कष्ट अपार रे, (2)
इन्द्री जीत करे वस अपने, हृदय नहीं विचार रे,
सत संगत जग .....

3 मंदिर जाऐ करे नित पूजा, राखे बड़ो अचार रे, (2)
साधु जन की कदर ना जाने, मिले ना सिरजनहार रे,
सत संगत जग .....

4 बिन सतसंग ज्ञान नहीं उपजे, कर ले यत्न हजार रे, (2)
'ब्रह्मानंद' खोज गुरु पूरा, उतरो भवजल पार रे,
सत संगत जग .....

सन्त-महात्माओं ने सतसंग पर बहुत जोर दिया हैं। दयालु महाराज कृपाल ने मुझे बहुत प्यार भरे लहजे में कहा था, "बेटा! अगर शरीर कमजोर हो जाए जब तक चारपाई पर हिल-जुल सकते हो तब तक सतसंग न छोड़ो बेशक आपको किसी का सहारा लेकर भी क्यों न जाना पड़े।"

हिन्दुस्तान में आमतौर पर लोग तीर्थों पर जाकर नहाने में मुक्ति समझते हैं। ब्रह्मानंद जी प्यार से कहते हैं, ''चाहे आप काशी नहा लें, चाहे हरिद्वार नहा लें, चाहे हिन्दुओं के चारों धामों की यात्रा कर लें आपका मन बस में नहीं आएगा। मन को शान्ति नहीं आती बल्कि अहंकार आ जाता है कि मैंने इतने तीर्थ कर लिए हैं।''

ब्रह्मानंद जी कहते हैं, ''ऋषि-मुनियों ने तप-साधन में कोई कमी नहीं रखी। जंगलो में चले गए, काया को कष्ट दिया, तप किया इन्द्रियों को टेम्परेरी वश में करके दिल में ख्याल आया कि अब मैं पूर्ण योगी हो गया हूँ लेकिन मन के अंदर न शान्ति आई न कोई विचार आया कि कब मेरे मन ने मुझे धोखा दे देना है!''

श्रृंगी ऋषि मशहूर हुआ है। आप सबने उसकी कहानियाँ सुनी हैं। श्रृंगी ऋषि बचपन से ही जंगल में चला गया। दिन में एक बार पेड़ पर जुबान लगा लेना ही उसका भोजन था। राजा दशरथ के राज्य में अकाल पड़ा। ज्योतिषियों ने राजा दशरथ से कहा अगर श्रृंगी ऋषि यहाँ आकर यज्ञ कर दे तो बारिश हो सकती है।

एक औरत ने यह बीड़ा उठाया। उसने कहा कि मैं श्रृंगी ऋषि को यहाँ ला सकती हूँ। वह औरत जंगल में चली गई। उस औरत ने देखा कि श्रृंगी ऋषि दिन में एक बार ही पेड़ पर जुबान लगाता है। उस औरत ने पेड़ पर शहद लगा दिया। जब शहद मीठा लगा तो ऋषि जहाँ एक बार जुबान लगाता था वह वहाँ दो बार जुबान लगाने लगा फिर उस औरत ने उस जगह पर हलवा लगाना शुरु कर दिया। जब ऋषि ने हलवा खाया तो शरीर के अंदर ताकत आ गई। जब शरीर हष्ट-पुष्ट होता है तब मन अपनी चालें चलता है। मन काम इन्द्री को पीछे लगा देता है, जब काम ने जोश मारा तो औरत पास ही थी। वहाँ कबीलदारी शुरु हुई कई बच्चे पैदा हुए।

औरत ने श्रृंगी ऋषि के आगे ख्याल जाहिर किया कि यहाँ जंगल में रहकर बच्चों का पालन-पोषण नहीं हो सकता हमें शहर में जाना चाहिए। श्रृंगी ऋषि जो कभी गाँव-शहर में नहीं जाता था उसने दो बच्चे कँधे पर उठाए, एक बच्चा और औरत पीछे आ रही थी। श्रृंगी ऋषि ने वहाँ पहुँचकर यज्ञ किया। किसी ने ताना मारा कि हमने सुना था कि श्रृंगी ऋषि वन में रहता है कभी गाँव में नहीं आता बहुत बड़ा त्यागी है। यह देखो! इसके आगे-पीछे बच्चे रोते हैं यह कैसा त्यागी है? ऋषि वापिस जंगल में भाग गया।

ऋषि-मुनि बुरे ख्यालों के नहीं थे वे बहादुर थे। मन ने उन्हें क्यों धोखा दे दिया क्योंकि उन्हें कोई गुरु नहीं मिला इसलिए वे

बाहर ही साधना करते रहे, कष्ट उठाते रहे। हम सामाजिक लोग अपने-अपने धर्म स्थानों में कोई मंदिर में, कोई गुरुद्वारे में, कोई चर्च में, कोई मस्जिद में जाता है। हम वहाँ परमात्मा की चर्चा सुनते हैं, पवित्र ग्रन्थों का पाठ सुनते हैं। प्रार्थना सुनते और करते भी हैं उसमें पूर्ण साधु की संगत पर जोर दिया है लेकिन हम उस तरफ ध्यान नहीं देते। ब्रह्मानंद जी कहते हैं :

मंदिर जाऐ करे नित पूजा, राखे बड़ो अचार रे।
साधु जन की कदर ना जाने, मिले ना सिरजनहार रे।।

हम उन्हीं कर्मकाण्डों में उलझकर रह जाते हैं। कर्मकाण्ड करने वालो को न कभी परमात्मा मिला है और न कभी मिल ही सकता है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

कर्म धर्म पाखण्ड जो दीसे तिस जम जोगाती लूटै।
निर्वाण कीर्तन गाओ हर करते का निमख सिमरन जित छूटे।।

ब्रह्मानंद जी कहते हैं, ''आप पूरे गुरु की खोज करें उससे नाम लें। आप अपने जीवन को पवित्र करके इस भवजल से पार हो सकते हैं।'' महात्मा हमें बताते हैं कि बिना सतसंग के चाहे आप हजारों किस्म के जप-तप करके देख लें! आपके अंदर सोई हुई आत्मा नहीं जागेगी न अंदर प्रकाश होगा, न ही आपके अंदर परमपिता परमात्मा की आवाज आएगी।

सतसंग के बिना हमारे अंदर विवेक बुद्धि पैदा नहीं होती, हम विवेक बुद्धि के बिना सच और झूठ का निर्णय नहीं कर सकते। यह सारी कायनात नाशवान है, यहाँ तक कि हमारे शरीर ने भी हमारा साथ नहीं देना। हमें विवेक बुद्धि से यह परख हो जाती है कि परमात्मा सत है या जिस महात्मा ने उस सत के साथ संपर्क कर लिया, वह सत के साथ जुड़ गया और सत का रूप हो गया।

कबीर साहब कहते हैं, ''पूर्ण महात्मा की संगत नाव का काम करती है। जो जीव, महात्मा की शब्द रूपी नाव में बैठ जाते हैं वे भवसागर से पार हो जाते हैं। परमात्मा से मिलने और ज्ञान प्राप्त करने का और कोई उपाय नहीं।'' कबीर साहब कहते हैंः

कथा कीर्तन कल विखे भवसागर की नाव।
कहे कबीर जग तरन को नाही और उपाव।।

मैं तो आन पड़ी चोरन के नगर, सतसंग बिना जीय तरसे।।

आत्मा प्रभु परमात्मा के आगे पुकार करती है, ''हे प्रभु! मैं चोरों के नगर में आ गई हूँ, मुझे तेरी संगत नहीं मिलती।'' स्वामी जी महाराज ने कहा था कि सतसंग दो प्रकार का है; पहला पूर्ण महात्मा का बाहरी सतसंग है और दूसरा जब हम अंदर जाकर उस शब्द के साथ जुड़ जाते हैं वह अंतरी सतसंग है।

यह शरीर एक नगर है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ये पाँच चोर हैं। ये पाँचों चोर आत्मा से ताकत लेकर इसी को कमजोर कर रहे हैं। कबीर साहब कहते हैंः

मुसाफिर जागते रहना नगर में चोर आते हैं।
जरा सी नींद गफलत में देखकर झटपट गठरी उठाते हैं।।

हम आराम से सोए होते हैं लेकिन जब काम अंदर से डोर हिलाता है उस समय हम होशियार हो जाते हैं। हम सोचते हैं शायद! हम आनंद ले रहे हैं, हम आनंद नहीं ले रहे होते बल्कि अपनी पूँजी गँवा रहे होते हैं।

जब अंदर लोभ का जोर ठाठें मारता है तो हम अपनी शांति भंग कर लेते हैं। जब माया हमें थोड़ा सा यत्न करने से नहीं मिलती तब हम चोरी, ठग्गी और फरेब करना शुरु कर देते हैं।

जो इन पाँच चोरों के बस में पड़ा है वह अंदर से बहुत तड़फता है कि मैं सतसंग में जाऊँ लेकिन वह सतसंग के लिए वक्त भी नहीं निकाल पाता। हम छोटे बच्चे को माता से कितना भी दूर ले जाए फिर भी माता-पिता के अंदर ममता होती है वे मिलने के लिए तड़फते रहते हैं। आत्मा परमात्मा की अंश है, प्यार अंशा-अंशी होता है। आत्मा का झुकाव हमेशा ही परमात्मा की तरफ रहता है।

इस सतसंग में लाभ बहुत है तुरत मिलावै गुर से ।।

आप प्यार से कहते हैं, ''इस सतसंग के बहुत लाभ है जो ब्यान नहीं किए जा सकते। पूर्ण महात्मा के सतसंग से हमारे अंदर गुरु का प्यार जाग पड़ता है। संगत में आकर बुरे संस्कार दब जाते हैं और अच्छे संस्कार जोश मारने लग जाते हैं।''

प्रेमी आत्मा को सतसंग के साथ इस तरह प्यार हो जाता है जिस तरह मछली का पानी के साथ प्यार होता है। मछली पानी से बाहर निकालते ही तड़फकर मर जाती है इसी तरह प्रेमी आत्मा खाने के बिना रह सकती है लेकिन सतसंग के बिना नहीं रह सकती। हम सब आते तो सतसंग में है लेकिन बहुत से प्रेमी सतसंग में आकर सो जाते हैं, बातें करने लग जाते हैं या उनको सतसंग में रस नहीं आता तो वे उठकर चले जाते हैं।

मूरख जन कोइ सार न जानै, सतसंग में अमृत बरसे।।

हम मूर्ख, मुग्ध और अज्ञानी हैं। परमात्मा सतसंग के जरिए सन्तों की जुबान से अमृत बरसाता है। भाग्यशाली जीव उस अमृत को पीते हैं। परमात्मा के प्यार में भीगे महात्मा के अनमोल वचन भाग्यशाली जीवों पर असर कर जाते हैं। मूर्ख लोग पापों के भार के नीचे दबे होते हैं वे महात्मा के वचनों की कद्र नहीं करते।

भाई मर्दाना गुरु नानकदेव जी का बहुत प्यारा शिष्य था। वह हर यात्रा में, हर उदासी में गुरु नानकदेव जी के साथ रहा। एक दिन गुरु नानकदेव जी दया करके मर्दाना की सुरत को अंदर के मण्डलों में ले गए। वहाँ मर्दाना अमृत के झरने देखकर गद्-गद् हो गया। मर्दाना ने गुरु नानकदेव जी से पूछा, ''महाराज जी! ये झरने बहकर कहाँ जा रहे हैं?'' गुरु नानकदेव जी ने कहा, "देख भई! यह अमृत है। परमात्मा के भेजे हुए महात्मा मातलोक में सतसंग करते है यह अमृत उनकी जुबान पर पड़ता हैं, वे इस अमृत को संगत के बीच बरताते हैं, भाग्यशाली जीव महात्मा के वचनो को अपने हृदय में बिठा लेते हैं। वे महात्मा के एक-एक वचन को करोड़ो रूपयों का समझते हैं और शांति प्राप्त करके अपने घर वापिस सच्चखंड पहुँच जाते हैं।" गुरु रामदास जी कहते हैंः

गुरु अमृत भिन्नी दयोहरी, अमृत गुरु के राम राजे।।

सन्तों की देह अमृत की गागर होती है। जिस तरह हम पानी का फव्वारा छिड़कते हैं उसी तरह सन्त उस अमृत को फव्वारे की तरह संगत पर छिड़कते हैं।

शब्द सा हीरा पटक हाथ से, मुट्ठी भरी कंकर से।।

सन्त-महात्मा सतसंग के जरिए हमें 'शब्द-नाम' के फायदे बताते है लेकिन हम शब्द-नाम की कमाई नहीं करते, विषय-विकारों में लगे रहते हैं। विषय-विकार कंकर हैं, हम इन कंकरों को मुट्ठी में पकड़े रखते हैं। हम सतसंग भी सुनते हैं, डायरी भी रखते हैं लेकिन ऐब छोड़ने के लिए, पाँच डाकुओं- काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार का संग छोड़ने के लिए तैयार नहीं होते। राजस्थान की कहावत हमारे ऊपर सही बैठती हैः

पंचायत आई सिर मत्थे, परनाला ओथे ही।

कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सुरत करो वहि घर से।।

कबीर साहब कहते हैं, ''प्यारेयो! आपको सतसंग सुनते हुए बहुत दिन हो गए हैं अब तो आप अपना झुकाव अंदर की तरफ करें। थोड़े से ऐब होते हैं अगर हम एक सतसंग में एक ऐब छोड़े दूसरे सतसंग में दूसरा ऐब छोड़ें तो हम थोड़े ही दिनों में सिमरन के जरिए अपने तन और मन को पवित्र कर सकते हैं।''

जिनकी लगन गुरु सों नाहीं, जिनकी लगन गुरु सों नाहीं।।

कबीर साहब हमें बड़े प्यार से समझाते हैं कि हमें सतसंग में जाकर ही समझ आती है कि हम अपनी पूँजी लुटा रहे हैं, बहुत घाटे वाला काम कर रहे हैं। जिंदगी का एक-एक स्वांस करोड़ो रूपए मूल्य देने से भी नहीं मिलता लेकिन हम रोजाना अपनी जिंदगी के चौबिस हजार स्वांस ऐसे ही बिता रहे हैं क्योंकि हमारी जिंदगी के सारे स्वांस लेखे में हैं।

स्वामी जी महाराज ने कहा था जो पत्थर पानी में पड़ा है बेशक पत्थर के अंदर पानी जज्ब नहीं होता लेकिन वह तपिश से तो बचा हुआ है। इसी तरह जिनके ऊँचे भाग्य हैं उन्हें परमात्मा अंदर से प्रेरणा देता है वे महात्मा की संगत में लग जाते हैं और धीरे-धीरे वे भी एक दिन अपने मन को समझाकर ऐबों-पापों को छोड़कर शब्द-नाम की कमाई में लग जाते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

जह गुरु तह सतसंग बनाई।।

संगत गुरु नहीं बना सकती, गुरु जब भी संसार में आता है संगत बना लेता है। महाराज कृपाल सिंह जी कहा करते थे, ''परमार्थ छूत की बिमारी की तरह फैलता है जैसे किसी एक को खारिश हो तो जो भी उसकी संगत करता है वह भी खारिश करने

लग जाता है।'' इसी तरह सन्त-महात्माओं को मालिक के साथ प्यार होता है। परमात्मा अपने प्यारे सन्तों को संसार में भेजता है। जिन जीवों का टाईम आ जाता है सन्त उन्हें 'शब्द-नाम' का भेद दे देते हैं, सतसंग के जरिए समझाते हैं कि प्यारे बच्चों! यह देश तुम्हारा नहीं, यह कौम तुम्हारी नहीं, तुम्हारा देश सच्चखंड है; तुम्हारी कौम सतसंग है। आप परदेस में मारे-मारे फिरते हैं। जब हम महात्मा का संदेश सुनते हैं तो हम भी उस तरफ लग जाते हैं।

सन्त-महात्मा हमारी तरह कर्मों के कैदी नहीं होते, वे कर्मों का भुगतान करवाने के लिए नहीं आते। वे संसार में परमात्मा के भेजे हुए आते हैं। उन्हें आने की खुशी नहीं होती और जाने का गम नहीं होता। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''मुलजिम जेलखाने में जाता है वह जेल में सजा भोगता है लेकिन डॉक्टर उसके इलाज के लिए जेल में जाता है।'' स्वामी जी महाराज कहते हैं:

बहुत उठावे जीवन भार।

महात्मा यहाँ ऐश करने के लिए नहीं आते। हम भूले जीवों ने जो बुरे कर्म किए होते हैं वे उनका भुगतान करवाने के लिए आते हैं। वे हमें नाम की कमाई करने में लगा देते हैं, हम अपने बुरे कर्मों को हल्का कर लेते हैं। हम जिन कर्मों को हल्का नहीं कर सकते उन्हें वे बख्श देते हैं, हमारे कुछ कर्म अपने ऊपर भुगता लेते हैं।

मैं महाराज सावन सिंह जी का एक वाक्या सुनाया करता हूँ कि आपको बहुत तेज बुखार था। एक प्रेमी ने आपसे, ''सन्तों की यह हालत, सन्तों को इतना बुखार? क्या यह आपका अपना कर्म है?'' महाराज सावन सिंह जी ने हँसकर कहा, ''यह मेरे किसी खास प्रेमी का कर्म है।'' यह कर्म उसी प्रेमी का था जो आपसे यह सवाल पूछ रहा था।

मैं अपनी जिंदगी का यह वाक्या बताया करता हूँ कि महाराज कृपाल ने गंगानगर आना था। आपके भेजे हुए कुछ प्रेमी एक दिन पहले मेरे पास आए, उस समय मुझे बहुत तेज बुखार था। उन्होंने गंगानगर पहुँचकर मेरे बुखार के मुत्तलिक महाराज कृपाल को तार दे दिया। मैं बगैर किसी दवाई के ठीक-ठाक हो गया लेकिन महाराज कृपाल को बहुत सख्त बुखार हो गया। अगले दिन संगत महाराज कृपाल के आने का इंतजार कर रही थी। मैंने उन लोगों से कहा, "अभी महाराज जी नहीं आएंगे। आप लोगों ने उन्हें तार देकर बहुत बुरा किया। महाराज जी ने मेरा भार अपने ऊपर ले लिया।" महाराज कृपाल दो दिन लेट आए। आप जब आए तो आपका चेहरा बिलकुल पीला पड़ा हुआ था।

मेरा एक चश्मदीद वाक्या है कि महाराज सावन के दरबार में एक प्रेमी आया जिसने अपना मुँह काला किया हुआ था। उसने कहा, ''मुझसे पाप हो गया, मुझे बख्श दें।'' उस समय संगत बैठी थी। महाराज जी ने कहा, ''हाँ भई! कोई इसके कर्म उठाने वाला है?'' अब कौन बोले! बोझ तो हमसे अपना ही नहीं उठाया जाता। महाराज जी ने उससे यह भी नहीं पूछा कि तूने क्या पाप किया है और उससे कहा, ''अच्छा बैठ जा! बख्शने वाला भी अंदर ही है।''

कबीर साहब कहते हैं, ''जो महात्मा सुखों का देश छोड़कर बिमारियों का खोल पहनकर हमारे साथ सच्ची हमदर्दी रखता है। हमारे हर दुख-सुख में सहाई है अगर हम उसके साथ दिखावे का प्यार करें तो यह हमारी कितनी भारी भूल है।''

ते नर खर कूकर सम जग मे, बिरथा जन्म गँवाईं।।

कबीर साहब बहुत सख्त लफ्ज कहते हैं कि जो परमात्मा की भक्ति नहीं करते वे कुत्ते जैसे हैं, गधे जैसे हैं। परमात्मा ने मनुष्य

जन्म अपनी भक्ति के लिए बख्शा था और दया करके गुरु के साथ मिलाप भी करवा दिया वे फिर भी अपना जन्म बेकार गँवा रहे हैं।

अमृत छोड़ि विषय रस पीवैं, धृग-धृग तिन के ताईं।।

गुरु का प्यार, गुरु की भक्ति अमृत है। यह उस अमृत रस को छोड़कर विषयों का रस पीता है।

हरी बेल की कोरी तुमड़िया, सब तीरथ करि आई।।
जगन्नाथ के दरसन करके, अजहुँ न गई कडुवाई।।

उनकी हालत इस तरह है जैसे बेल को तुम्बी लगी होती है, तुम्बी कड़वी होती है। बेशक तुम्बी अड़सठ तीर्थों पर जाकर स्नान कर आए, बेशक जगन्नाथ के मंदिर में भी क्यों न चली जाए उसका कड़वापन खत्म नहीं होता।

जैसे फल उजाड़ को लागो, बिन स्वारथ झरि जाई।।
कहैं कबीर बिन बचन गुरु के, अन्त काल पछिताई।।

जिस तरह उजाड़ में पेड़ो को फल लगते हैं लेकिन उनका कोई वारिस नहीं होता है वे ऐसे ही झड़ जाते हैं। कबीर साहब एक ही नसीहत करते हैं कि जिन्होंने अपने प्यारे गुरु के वचन के ऊपर अमल नहीं किया उन्हें अन्त समय में पछताना पड़ेगा कि मैंने अपना जीवन ऐसे ही विषय-विकारों में खो दिया। मैंने अपने गुरु के कहे मुताबिक अपने जीवन को नहीं ढाला।

हमारे प्यारे सतगुरु हमारे ऊपर बहुत दया करके लंबे-लंबे सफर करके जगह-जगह जाकर हमारे अंदर गुरु का प्यार जगाते हैं। सतसंग के जरिए हमारे अंदर विरह तड़फ पैदा करते हैं अगर हम ऐसे महात्मा के वचनों का पालन नहीं करते तो आखिर में हमें पछताना पड़ता है।

12 जून 1995

***

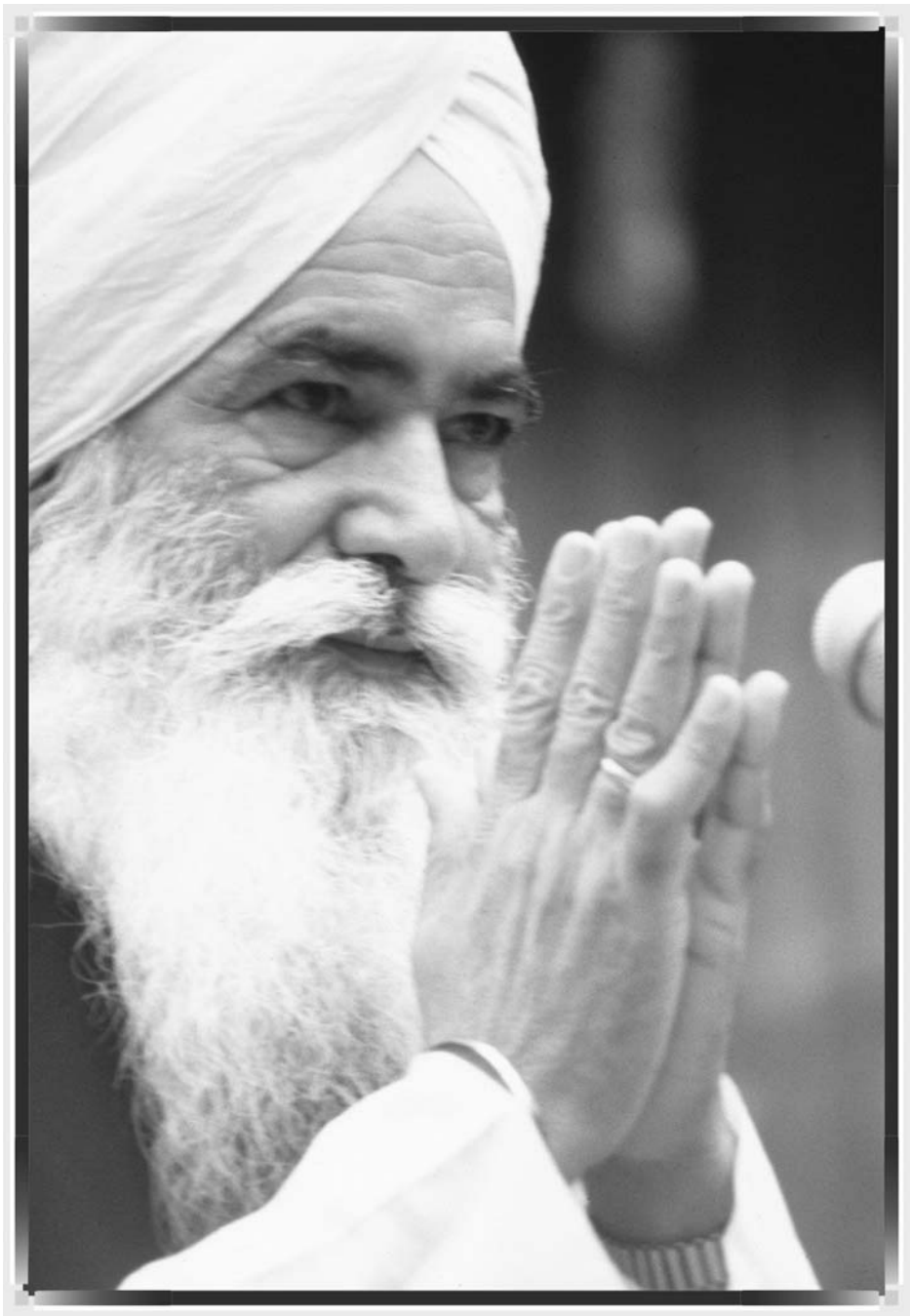

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

अपने आपको गुरु पर समर्पित करें

16 पी.एस.आश्रम, राजस्थान

एक प्रेमी:- *हमें बताएं कि शिष्य का दुनियावी जीवन में व्यवहार और शिष्य किस तरह अपने आपको गुरु पर समर्पित करे ?*

बाबा जी:- यह एक अच्छा सवाल है। हम सतसंग में सुनते हैं और गुरुओं का लिखा भी पढ़ते हैं कि हमें **अपने आपको गुरु पर समर्पित कर देना चाहिए**। जब गुरु संसार में आते हैं तो वे आदर्श जीवन जीते हैं और अपना पूरा ध्यान भजन-अभ्यास को देते हैं। वे हमें प्रेरित करने के लिए ऐसा जीवन जीते हैं कि हम भी वैसा ही जीवन जिएं। हमें दुनियावी चीज़ों को करते हुए गुरु की आज्ञा पर ध्यान देना चाहिए और भजन-सिमरन करना चाहिए।

कल गुरु नानकदेव जी की बानी पर सतसंग किया था। जिसमें आपने सुना था कि किस तरह गुरु अंगददेव अपनी दुनियावी जिम्मेवारियों को निभाते हुए, गुरु के प्रति अपना कार्य करते रहे। अंगददेव ने गुरु की आज्ञा का पालन किया, **अपने आपको गुरु पर समर्पित कर दिया** और आप गुरु के शरीर का अंग बन गए।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''जब शिष्य गुरु के पास आता है तो पहले वह जो जप-तप कर रहा होता है उसे वे कर्म छोड़ देने चाहिए। गुरु शिष्य को जिस मार्ग पर डालता है, वही मार्ग उसका धर्म बन जाना चाहिए। शिष्य को सच्चाई से गुरु भक्ति पर कायम रहना चाहिए।'' मैंने कई बार कहा है, ''गुरु के पास आने से पहले चाहे आप जितनी मर्जी खोज कर लें, गुरु का इतिहास पढ़ लें कि उसने कोई भजन-अभ्यास किया है या नहीं? लेकिन जब आपने उसे गुरु

मान लिया है तो उसके बाद गुरु जो भी कहे आपको वही करना चाहिए। यह अच्छी बात नहीं कि आप कमजोर पड़ जाएँ, आपको उस मार्ग पर अडिग रहना चाहिए जिस मार्ग पर आपको आपके गुरु ने डाला है।''

महाराज सावन सिंह जी ने फौज में सेवा की। आपने इस दुनिया में और भी बहुत से काम किये लेकिन आपने सबसे ज्यादा समय भजन-अभ्यास, गुरु प्यार और गुरु की आज्ञा का पालन करने को दिया। हममें यही कमी है कि हम गुरु प्यार को वह जगह नहीं देते जो हमें देनी चाहिए। हम हमेशा मन की आज्ञा मानने के लिए तैयार रहते हैं क्योंकि हमने मन को अपना मालिक बना रखा है ।

कबीर साहब का एक नामलेवा, नामदान लेने के बाद दूसरे मार्ग पर चला गया और उसने मन के कहने पर बहुत से काम किए। जब उस पर मुसीबत आई तो उसने अपने गुरु कबीर साहब को याद किया और उनके पास गया।

तब कबीर साहब ने उससे कहा कि तुमने इधर-उधर घूमकर अपनी आत्मा को क्यों परेशान किया? अगर तुमने वह किया होता जो मैंने तुम्हें बताया था, तुमने अपनी आत्मा को नाम की दवाई पिलाई होती तो तुम्हें इन सब दुःखों से नहीं गुजरना पड़ता। सन्त बहुत दयावान होते हैं। उन्होंने उसे प्यार से गले लगाया और उस पर दया की।

महाराज कृपाल अक्सर लैला-मजनूं के प्यार की कहानी सुनाया करते थे कि उनका प्यार विषय-विकारों वाला नहीं था। उनका प्यार बहुत पवित्र और ऊँची श्रेणी का था। जब लोग प्यार करने वालों की कहानियाँ सुनते हैं तो वे उन्हें देखने के लिए उत्सुक हो जाते हैं। एक बार एक राजकुमार मजनूं को देखने के लिए गया। किसी

ने मजनूं से कहा कि एक राजकुमार आपसे मिलना चाहता है। मजनूं ने कहा, ''अगर वह लैला बनकर आए तो मैं उससे मिल लूंगा।'' क्या हममें भी अपने गुरु के लिए इतना प्यार और दर्द है?

आमतौर पर गुरु के जाने के बाद लोग डेरे या आश्रम पर मुकद्दमों के लिए कचहरी जाते हैं। परम सन्त कृपाल सबसे बड़े सन्त थे जो अपने गुरु के आश्रम के लिए नहीं लड़े। मैंने वह मकान देखा है जो गुरु कृपाल ने डेरे में बनाया था, आप उस मकान के लिए भी वहाँ नहीं गए। आपने अपने आपको पूरी तरह से अपने गुरु पर समर्पित कर दिया था और आपका उन चीज़ों से कोई लेना-देना नहीं था। आपने कहा कि मैंने जो कुछ किया है अपने गुरु के लिए किया है। इसे कहते हैं गुरु के लिए सच्चा समर्पण।

प्यारेयो! हम **अपने आपको गुरु के प्रति पूरी तरह से समर्पित** तभी कर सकते हैं जब हम भजन-अभ्यास को पहल दें और गुरु की आज्ञा का पालन करें। हम दुनिया को दूसरे स्थान पर रखेंगे तभी हम कामयाब हो सकते हैं। महाराज कृपाल सदा कहा करते थे, ''मैं इसलिए कामयाब हुआ क्योंकि मैंने यह माना कि परमात्मा पहले और दुनिया बाद में।''

प्यारेयो! जब हम गुरु को अपना सब कुछ मान लेते हैं तो हम सबसे पहले गुरु को ही मुख्य रखते हैं। गुरु हमारा समाज नहीं बदलते। गुरु नहीं चाहते कि हम अपना परिवार या अपना समाज छोड़ें। हो सकता है हम उन जिम्मेवारियों का बोझ न उठाना चाहें जो हमने प्यार से अपने कंधों पर ली हैं लेकिन गुरु हमें सदा प्रेरित करते हैं कि हम अपनी दुनियावी जिम्मेवारियाँ निभाएँ। गुरु सदा हम पर अपनी दया बरसाता है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''हम पूर्ण गुरु से मिले हैं। गुरु हमें परिवारिक जीवन में जीने के साथ-साथ मुक्ति दिलाता है।''

हमारे अंदर गुरु प्यार इसलिए नहीं जागता क्योंकि हम अपने आपको पूरी तरह से गुरु पर समर्पित नहीं करते। हम गुरु को और भजन-अभ्यास को पहला स्थान नहीं देते। हम हमेशा पहला स्थान दुनियावी चीजों को देते हैं। हमारी यह हालत इसलिए है क्योंकि हम काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की दलदल में फँसे हुए हैं अगर हमने अपने आपको पूरी तरह से गुरु और भजन-सिमरन पर समर्पित कर दिया होता तो हमें ये मुश्किलें न आतीं। हुजूर सावन सिंह जी महाराज अक्सर पंजाबी की यह कहावत सुनाया करते थेः

हत्थ कार वन्नी, दिल यार वन्नी।

आपके हाथ काम करने के लिए हैं और दिल उस प्यारे को याद करने के लिए है। हममें से ऐसे कितने लोग हैं जो दुनियावी काम करते हुए गुरु के स्वरूप को अपनी आँखों के सामने ले आते हैं या गुरु को याद करते हैं। हम सब तकरीबन दुनिया के बारे में ही सोचते हैं। जब हम भजन-अभ्यास के लिए बैठते हैं तब हमें गुरु को याद रखना चाहिए लेकिन हम तब भी दुनियावी चीजों के बारे में सोच रहे होते हैं।

कबीर साहब का नामलेवा धर्मदास था। हम अनुराग सागर में कबीर साहब और धर्मदास के सवाल-जवाब पढ़ते हैं। धर्मदास बहुत अमीर आदमी था। उस समय भारत में पैसे की बहुत कीमत थी। वह उस समय चौदह करोड़ का मालिक था, उसे धनी धर्मदास के नाम से बुलाया जाता था। आप सोच सकते हैं कि जिसके पास इतना पैसा था तो उसके पास कितने किस्म के अलग-अलग तरह के व्यापार और काम होंगे और उसकी कितनी जिम्मेवारियाँ होंगी।

जब धर्मदास को कबीर साहब से नामदान मिला वह अंदर गया तब उसने यही कहाः

सुपने इच्छा न उठे गुरु आन तुम्हारी हो।

हे सतगुरु! मैं आपकी कसम खाता हूँ कि अब मुझे काम या किसी दूसरी चीज की अभिलाषा नहीं है। मुझे स्वपन में भी आपके अलावा कोई और इच्छा नहीं। सच्चा शिष्य गुरु के नाम की कसम नहीं लेगा। वह किसी भी तरह का नुकसान सह लेगा लेकिन कभी भी गुरु की कसम नहीं लेगा क्योंकि शिष्य जानता है कि मेरा गुरु परमात्मा है।

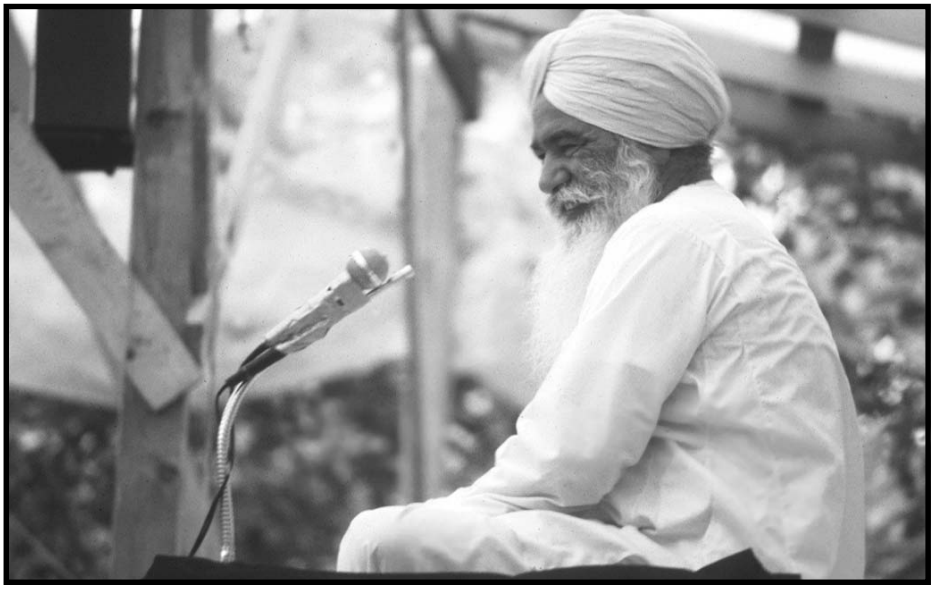

अगर जागते हुए और दुनियावी काम करते हुए हमारे सामने गुरु का सुंदर स्वरूप हो तो क्या हमें सोते हुए गुरु के दर्शन नहीं होंगे? जो लोग दिन में गुरु को याद करते हैं उन लोगों को सोते हुए भी गुरु के दर्शन होते हैं। अगर दिन में हमारी कोई दुनियावी

इच्छा है तो वह इच्छा हमें बुरे स्वपन के रूप में आती हैं। अगर हम दिन में गुरु के सुंदर स्वरूप को याद करते हैं तो वह रात में भी हमें दर्शन देगा।

प्यारेयो! इस दुनिया में काल पावर ने सब तरफ अपना जाल बिछा रखा है। सन्त-महात्मा भी इस दुनिया में आपको कोई ऐसी जगह नहीं बता सकते कि जहाँ आप जाएँ और दुनिया के कारोबार में न फँसें या जहाँ आपको पवित्र प्यार मिल सके। सन्त-महात्माओं का अपना तजुर्बा होता है अगर हम अंदर जाएँ इस स्थूल शरीर से ऊपर उठकर अपनी आत्मा से स्थूल फिर सूक्ष्म पर्दा हटाकर कारण मंडल पार करके ऐसी जगह पहुँचें जहाँ प्रेम की रचना शुरू होती है। वहाँ औरत-मर्द का कोई भेद नहीं। वहाँ कोई दुश्मन नहीं, वहाँ केवल प्रेम बरसता है। जब हम अपनी आत्मा से सभी पर्दे हटाकर वहाँ पहुँचते हैं तब हमें पता लगता है कि हमें अपने गुरु का शुक्रगुज़ार होना चाहिए। हम तभी सीखते हैं कि हमने अपने आपको किस तरह **गुरु के चरणों में समर्पित करना है**।

जब हम प्रेम के स्थान पर पहुँच जाते हैं तब हम देखते हैं कि हम कितने समय से दुनिया की जिम्मेवारियाँ निभा रहे हैं। तब हमें समझ आता है कि हमें अपना असली काम अभ्यास करना चाहिए।

महाराज सावन सिंह जी इस बारे में एक बहुत सुंदर कहानी सुनाया करते थे कि एक घुड़सवार घोड़े पर कहीं जा रहा था। रास्ते में उसके घोड़े को प्यास लगी वह चाहता था कि उसके घोड़े को थोड़ा-सा पानी मिल जाए। वह एक ऐसी जगह पहुँचा जहाँ एक किसान बैलों को जोड़कर कुएँ से रहट के जरिए पानी निकाल रहा था। किसान ने घुड़सवार से कहा कि वह अपने घोड़े को इस तरफ ले आए जहाँ पानी निकल रहा है। घोड़ा जब पानी पीने लगे तो

रहट की आवाज से घबराकर पीछे हट जाए। घुड़सवार ने किसान से कहा कि तुम बैलों को क्यों नहीं रोकते? जब किसान ने बैलों को रोका तो पानी आना बंद हो गया। जब बैल चलते थे तो घोड़ा वहाँ पानी पीने नहीं जाता था क्योंकि उसे आवाज़ से डर लगता था। किसान को तजुर्बा था उसने कहा, ''पानी तो इसे टिक-टिक में ही पीना पड़ेगा।''

इसी तरह चाहे कितना भी मुश्किल हो हमें इस दुनिया में अपनी दुनियावी जिम्मेवारियाँ निभाते हुए सबसे पहले अपना ध्यान अपने असली काम भजन-सिमरन को देना होगा। गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''ऐसा प्रेमी अपने मुँह से दुनियावी लोगों से बात करता रहता है लेकिन उसने अपने अंदर अपने प्यारे परमात्मा को प्रकट कर लिया होता है। सतसंगी का जीवन ऐसा होना चाहिए कि चाहे बाहर से वह दुनियावी बातें या काम करे लेकिन अंदर से वह हमेशा अपने प्यारे गुरु को याद करे।'' एक भजन में लिखा हैः

अजायब दी पुकार है, खड़क रही तार है।

आपकी जुबान पर गुरु का सिमरन चलता रहे। आपकी आँखों में गुरु का सुंदर रूप बस जाना चाहिए और आप हर समय गुरु के सुंदर चेहरे को याद करें।

महात्मा कहते हैं कि उस प्यारे के दर्शनों के लिए लोग अपना घर-बार छोड़ देते हैं, जंगलों में चले जाते हैं और कई किस्म के कर्म करते हैं। भूख-प्यास से तड़पकर अपने शरीर को हरड़ की तरह सुखा लेते हैं लेकिन ये सब करने पर भी उन्हें उस प्यारे के दर्शन नहीं होते आखिर में जब उन्हें बाहर से कुछ नहीं मिलता तो वे वापिस अपने घर लौट आते हैं।

जब उन्होंने परमात्मा की खोज में अपना घर छोड़ा तब उन्होंने हर तरह की कोशिश की लेकिन ऐसे प्रयत्न करने से न उनका काम घटा न क्रोध घटा और न ही उन्हें अपने किसी भी दोष से छुटकारा मिला। जब अपने घर वापिस लौटकर आए तो उन्हें शर्म का सामना करना पड़ा क्योंकि लोग उन पर हँसे। सन्त हमें घर-बार छोड़ने के लिए नहीं कहते, त्यागी बनने के लिए नहीं कहते।

पूर्ण सन्त कहते हैं कि आप रोजाना सुबह उठकर दो-तीन घंटे अभ्यास करें, साफ-सुथरा जीवन बिताएं। ईमानदारी से अपनी रोजी-रोटी कमाएं। आपको जो दुनियावी जिम्मेवारियाँ मिली हैं उन्हें खुशी से निभाएं अगर आप अभ्यास पर ध्यान दें और **अपने आपको गुरु पर समर्पित करें** तो आपको मुक्ति मिल सकती है।''

मैं आपको आर्मी की एक दिलचस्प कहानी सुनाता हूँ। एक बार मैं दो दिन की छुट्टी पर घर आया, मेरे साथ तीन-चार दोस्त भी थे। हम सबने एक ही ट्रेन से वापिस जाना था। मेरे वे दोस्त भी उसी जगह रहते थे। हमने दोपहर के बारह बजे वाली ट्रेन से जाना था लेकिन हम घर से ही लेट निकले तो ट्रेन जा चुकी थी इसलिए हम ड्यूटी पर देर से पहुँचे। जब हम ड्यूटी पर देर से पहुँचे तो हमसे सवाल किए गए कि हम समय पर वापिस क्यों नहीं पहुँचे।

अगले दिन हमारे अफसर ने हमें बुलाया और उसने हमसे पूछा, ''आप लोग देर से क्यों आए हैं, आपने सूचना क्यों नहीं भेजी?'' वह हमारी पहली गलती थी। आमतौर पर आर्मी में पहली गलती पर छोटी-सी हिदायत देकर माफ कर दिया जाता है। जब हमारे अफसर ने हमसे सवाल किए तो हम घबराए हुए थे। मेरे चारों दोस्तों ने कहा कि ट्रेन देर से आई लेकिन जब अफसर मेरे

पास आया तो मुझे लगा कि मुझे सच बताना चाहिए। मैंने अपने अफसर से कहा, ''साहब! ट्रेन तो समय पर आई थी लेकिन हम घर से ही देर से निकले थे इसीलिए हमारी ट्रेन निकल गई। अब यह आप पर निर्भर है कि आप हमें जो भी सजा दें।''

मैंने जब अपने अफसर से सच कहा तो वह खुश हो गया और उसने हम सबको माफ कर दिया। उस समय मैंने यह सीखा अगर हम घर से ठीक समय पर चलते तो हमारी ट्रेन नहीं निकलती और हम ड्यूटी पर समय से पहुँच जाते फिर कोई हमसे सवाल न करता और हमें किसी भी सजा का डर नहीं रहता, झूठ नहीं बोलना पड़ता। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि हमने घर में एक घंटा ज्यादा आराम किया तो हमें इस मुश्किल समय से गुजरना पड़ा।

मैंने सोचा जैसे हम अपने अफसर से घबरा गए थे क्या हम कभी अपने गुरु से भी ऐसे डरे, क्या हमने कभी भजन-अभ्यास को गम्भीरता से लिया है? बहुत से प्रेमीं कई-कई महीनों तक सिमरन नहीं करते क्या कभी उन्होंने सोचा है कि जब गुरु उन्हें बुलावा भेजेंगे या उनसे सवाल करेंगे तो वे क्या कहेंगे? मैं उस घटना को याद करके हमेशा सोचता हूँ कि हम लोग दुनियावी चीजों को ज्यादा महत्त्व देते हैं, भजन-अभ्यास को उतना महत्त्व नहीं देते। हम गुरु की उतनी परवाह नहीं करते जितनी परवाह दुनियावी अफसर की करते हैं।

मिस्टर ओबरॉय की किताब में सुंदरदास की कहानियाँ लिखी हैं। सुंदरदास को महाराज सावन सिंह जी के साथ रहने का बहुत मौका मिला, उसने बहुत से कर्म भोगे जिनके बारे में महाराज सावन सिंह जी ने उसे बहुत पहले ही बता दिया था।

मैं और सुंदरदास एक ही मकान में रहा करते थे। हम एक साथ खाते और भजन-अभ्यास करते थे। सुंदरदास कहा करता था, ''एक पल सिमरन करने का मतलब है कि हमें इक्कीस पलों का सिमरन मिल गया है। अगर हम एक दिन के लिए गुरु को भूल गए तो समझें कि हम इक्कीस दिनों के लिए गुरु को भूल गए। इसी तरह अगर हमने एक साल तक गुरु के दर्शन नहीं किए तो इसका मतलब है कि हमें इक्कीस सालों से गुरु के दर्शन नहीं हुए। हमें पता नहीं कि हम इतना लम्बा समय जिएंगे या नहीं? हम उस दरार को कैसे भरेंगे जो गुरु के दर्शन न करने से और गुरु को कई दिनों, कई सालों तक याद न करने के कारण बन गई है?''

सुंदरदास ने सदा ही अभ्यास को पहला स्थान दिया। एक बार हम खेत में आग के पास बैठकर अभ्यास कर रहे थे। हम लगातार आठ घंटे तक अभ्यास में बैठे रहे और उस बैठक के दौरान लकड़ी का एक जलता हुआ टुकड़ा सुंदरदास की टाँग पर गिर गया। उस जलती हुई लकड़ी के टुकड़े ने सुंदरदास की टाँग जला दी लेकिन उसे इसका पता ही नहीं चला। आपको पता है कि जब आपका शरीर जलता है तो कितना दर्द होता है लेकिन उसे कोई दर्द नहीं हुआ क्योंकि जब आप अंदरूनी मण्डलों का आनन्द ले रहे होते हैं तब आप सारा दर्द और तकलीफ भूल जाते हैं। बाद में जब वह शारीरिक चेतना में वापिस आया तो उसने कहा, ''आज मुझे अभ्यास में जैसा आनन्द आया वैसा आनन्द पहले कभी नहीं आया।''

डॉक्टरों ने कहा कि सुंदरदास की टाँग इतनी बुरी तरह जल गई है कि इसे काटना पड़ेगा लेकिन परमपिता कृपाल ने उसे टाँग कटवाने के लिए मना कर दिया। जब महाराज कृपाल दूसरे प्रेमियों के साथ मेरे आश्रम में आए तो आपने कहा, ''इसे कहते हैं भजन-

अभ्यास। क्या आपमें कोई ऐसा है जो अपना शरीर और सब कुछ भूलकर अभ्यास करते हुए गुरु के चरणों से जुड़ा रहे?''

इसे कहते हैं कि दुनियावी जिम्मेवारियों को निभाते हुए गुरु को पहला स्थान देना और **गुरु पर पूरी तरह से समर्पित हो जाना**। सुंदरदास अपनी सारी जिम्मेवारियाँ निभाता था। उसने अपने सभी दुनियावी कर्त्तव्यों को पूरा करते हुए पहला स्थान गुरु और भजन-सिमरन को दिया इसीलिए वह अपने अभ्यास में सफल रहा।

प्यारेयो! आजकल हमारे पास खेती करने के लिए ट्रैक्टर और दूसरी मशीनें हैं लेकिन उस समय हमारे पास केवल एक ऊँट और दो बैल थे। हम दोनों खेत में साथ-साथ काम करते थे। जो लोग हमारे आस-पास रहते थे वे छिपकर हमारी बातचीत सुनने की कोशिश करते थे।

जब उन्होंने सुना कि हम हर समय गुरु के बारे में, गुरु प्यार के बारे में बातें करते हैं तो वे लोग हैरान हुए कि हमारे दिल में गुरु के लिए इतना प्यार है। कुछ लोग तो यह भी कहते कि इन्हें कोई चिन्ता नहीं, इन्हें कोई दुनियावी काम नहीं। सुंदरदास बुजुर्ग है इसका परिवार मर गया है इसलिए इसे कोई चिन्ता नहीं है और मेरे लिए कहते कि इसने तो शादी नहीं करवाई इसका कोई परिवार नहीं है इसीलिए ये दोनों हमेशा गुरु की और परमात्मा की भक्ति की बात करते हैं।

मैं सुंदरदास से छोटा था। मैं सुबह उठ जाता और नहाकर चाय बनाता फिर सुंदरदास को उठने के लिए आवाज देता। मैं कहता, ''सुंदरदास! क्या जागे हुए हो?'' वह कहता, ''हाँ! मैं जागा हुआ हूँ पर आलसी हूँ उठना नहीं चाहता इसलिए ऐसा

दिखा रहा हूँ कि मैं सोया हुआ हूँ पर मैं जागा हुआ हूँ।'' फिर सुंदरदास चाय पीते हुए तुलसी साहब की यह तुक कहताः

भजन करन को आलसी भोजन को तैयार।
तुलसी ऐसे भक्त को लख वारी धिक्कार।।

यह कहने के बाद हम चाय पीकर अपना काम शुरू कर देते और अपना अभ्यास भी करते। हम दोनों बहुत मेहनत से काम करते। हमने कभी किसी तीसरे व्यक्ति को अपने पास रहने नहीं दिया। सुंदरदास कहा करता थाः

तीजा रलया ते काम गलया।

अगर हमने किसी तीसरे आदमी को अपने साथ रहने दिया तो वह हमारे लिए मुसीबत खड़ी कर देगा फिर हम भजन-अभ्यास नहीं कर पाएंगे। मैं और सुंदरदास खेती का सारा काम खत्म कर लेते और समय के साथ भजन-सिमरन भी करते। उस समय मेरे पास 'दो-शब्द' का भेद था। मैं उन दिनों 'दो-शब्द' का अभ्यास किया करता था। सुंदरदास बाबा सावन सिंह जी का नामलेवा था। सुंदरदास के पास 'पाँच-शब्द' का भेद था और वह 'पाँच-शब्द' का अभ्यास किया करता था।

बचपन से ही लोग मुझे देखने आते थे कि मैं सन्त हूँ लेकिन हम लोगों को अपने पास नहीं आने देते थे। जैसा कि सन्त अक्सर कहते हैं, ''अगर इत्र बेचने वाला इत्र न भी बेचना चाहे तो कई बार इत्र की शीशी खुली रह जाती है वह लोगों को आकर्षित करती है।'' कई बार लोग आते जो सन्तों को देखना चाहते थे।

जब वे लोग मुझे काम करने वाले कपड़ों में खेत में काम करते हुए या हल चलाते हुए देखते तो वे सोचते! क्या मैं वही सन्त हूँ जिसे वे देखने के लिए आए हैं? फिर वे कहते कि हम सन्त से

मिलना चाहते हैं। मैं कहता, ''हम यहाँ बैठते हैं और उनके आने का इंतज़ार करते हैं।'' फिर वे मुझसे बात करना शुरू करते तब उन्हें एहसास होता कि मैं वही व्यक्ति हूँ जिससे वे मिलने आए हैं।

मैं कभी अच्छे कपड़े नहीं पहनता था। मैंने कभी यह दिखावा नहीं किया था कि मैं सन्त हूँ जबकि लोग मुझे सन्त कहा करते थे। मैं बहुत सादा रहता और सभी दुनियावी काम करता था। खेती-बाड़ी के साथ-साथ हमारा भजन-सिमरन चलता रहता था। हमने कभी अपना अभ्यास नहीं छोड़ा। कई बार जब बहुत काम होता तो हम रात को उठते और अपना काम खत्म करते लेकिन हमने कभी किसी और को अपने साथ नहीं रहने दिया। हमने भजन-अभ्यास करते हुए अपने सारे दुनियावी काम भी किए।

मैं आप सबसे विनती करता हूँ कि यहाँ अभ्यास का जो टाईम-टेबल बनाया गया है उसका पालन करें। यहाँ आने से पहले आप अपने आपको तैयार करके आएं। जिन प्रेमियों को अपने घरों में ज्यादा अभ्यास करने की आदत नहीं है, वे जब यहाँ आते हैं तो वे भी वैसा ही करना चाहते हैं। वे पूरी नींद नहीं लेते जब उनकी नींद पूरी नहीं होती तो उन्हें सतसंग में बैठे हुए नींद आती है।

आपको अभ्यास के टाईम-टेबल का पालन करना चाहिए। खाना खाने के एकदम बाद अभ्यास के लिए नहीं बैठना चाहिए क्योंकि यह मेदे के लिए ठीक नहीं होता। अगर आपको यहाँ सतसंग में नींद आ रही है तो स्वाभाविक है कि आपको अभ्यास के दौरान भी नींद आएगी। कृपया टाईम-टेबल के अनुसार सोएं तो आपको सुबह जल्दी उठने में कोई दिक्कत नहीं होगी। कहने को और बहुत कुछ है लेकिन समय हो गया है।

2 मार्च 1988

***

धन्य अजायब

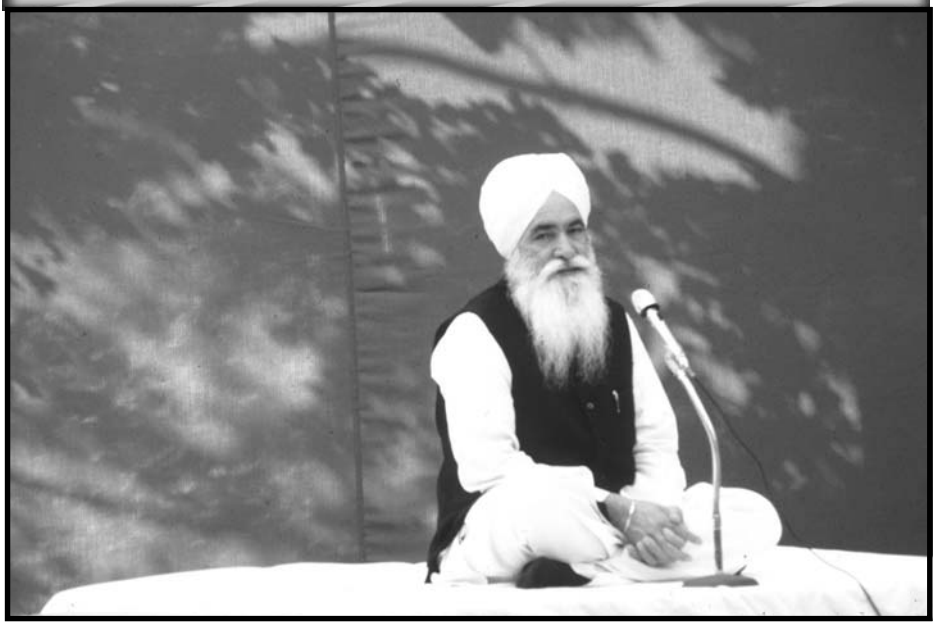

अहमदाबाद में सतसंग का कार्यक्रम

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया से हर साल की तरह इस बार भी अहमदाबाद में 1, 2 व 3 जुलाई 2016 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में विनती है कि सतसंग में पहुँचकर सन्त वचनों से लाभ उठाएं।

ईश्वर भवन,
क्रॉस रोड, (नजदीक कॉमर्स कालेज),
नवरंगपुरा,
अहमदाबाद (गुजरात)
फोन - 99 98 94 62 31, 97 25 00 57 94 व 96 38 75 20 20